# पर्यावरण : मेंढक और हमारा जीवन

**डॉ. महेश परिमल**

प्रकृति ने अपना संतुलन इतने बढ़िया तरीके से किया है कि आज के सारे प्रबंधन उसके सामने फेल हो जाते हैं। अब मेंढक को ही देखिए। विज्ञान के छात्र इसके अंगों को काटकर मनुष्य की जीवन प्रणाली को समझने का प्रयास करते हैं। पहले मेंढक काफी मात्रा में पाए जाते थे। उनका भोजन वही कीड़े-मकोड़े हैं, जो खेतों में फसल को नुकसान पहुंचाते हैं। अब मेंढक कम हो गए, क्योंकि लोग इनकी टांगों को खाने लगे हैं। दक्षिण भारत के लोग इसे पकड़कर विदेश भेजने लगे हैं, जहां लोग इनकी टांगों को खाते हैं। इससे कई लोगों को रोज़गार मिला है। लेकिन दूसरी ओर कीड़े-मकोड़ों की संख्या बढ़ने लगी है। सांपों का मुख्य भोजन मेंढक-चूहे हैं, लेकिन सांपों की संख्या कम होने के कारण चूहों की संख्या बढ़ने लगी है। दिल्ली रेलवे स्टेशन में चूहों का आतंक है, वे पटरियों के नीचे की जगह को पोली कर देते हैं, जिससे ट्रेनों के आवागमन में खतरा उत्पन्न हो गया है।

जिसे हम प्रगति और विकास कहते हैं, उससे नई समस्याएं कैसे पैदा होती हैं, इसका एक रोचक उदाहरण देखिए - यातायात के साधन बढ़ जाने से आयात-निर्यात में वृद्धि हुई है। संसार के देशों में आपसी व्यापार बढ़ा है। इसका लाभ उठाते हुए दक्षिण भारत से कुछ व्यापारी मेंढकों की टांगें भारी मात्रा में विदेशों को भेजने लगे। वहां ये भोजन के रूप में पसंद की जाती हैं। इस व्यापार में व्यापारियों को काफी मुनाफा मिलता है क्योंकि मेंढक नदियों व तालाबों के किनारे भारी संख्या में मिलते हैं। उन्हें सिर्फ पकड़ना होता है। अतः मेंढकों की टांगें डिब्बाबंद करने के बहुत से कारखाने खुल गए हैं। कुछ लोगों को रोज़गार मिला। विदेशी मुद्रा भी आने लगी। फिलहाल प्रति वर्ष 20 करोड़ मेंढकों का निर्यात हो रहा है। अब सरकार ने इस व्यवसाय को क्रमशः बंद करने का निर्णय लिया है।

किंतु मेंढकों का इतनी तेज़ी से सफाया करने के बहुत भयंकर परिणाम सामने आए हैं। मेंढक पानी व दलदल में रहने वाला जीव है। इसकी खुराक है वे कीड़े-मकोड़े, मच्छर तथा पतंगे, जो हमारी फसलों को नुकसान पहुंचाते हैं। अब हुआ यह कि मेंढकों की संख्या बेहद घट जाने से प्रकृति का संतुलन बिगड़ गया। पहले मेंढक बहुत से कीड़ों को खा जाया करते थे, किंतु अब कीट-पतंगों की संख्या बढ़ गई और वे फसलों को भारी नुकसान पहुंचाने लगे।

दूसरी ओर सांपों के लिए भी कठिनाई उत्पन्न हो गई। सांपों का मुख्य भोजन हैं मेंढक और चूहे। मेंढक समाप्त होने से सांपों का भोजन कम हो गया तो सांप भी कम हो गए। सांप कम होने की वजह से चूहों की संख्या में वृद्धि हो गई। वे चूहे अनाज की फसलों को चट करने लगे। इस तरह मेंढकों को मारने से फसलों को कीड़ों और चूहों से पहुंचने वाली हानि बहुत बढ़ गई। मेंढक कम होने पर वे मक्खी-मच्छर भी बढ़ गए, जो पानी वाली जगहों में पैदा होते हैं और मनुष्यों को काटते हैं या बीमारियां फैलाते हैं।

कीड़ों को मारने के लिए कीटनाशक दवाओं का और अधिक प्रयोग किया जाने लगा। ये दवाएं विदेशों से आयात की जाती हैं तथा बहुत महंगी हैं। अतः मेंढकों के निर्यात से होने वाली आय का कुछ भी लाभ नहीं हुआ। दूसरी ओर कीटनाशक दवाओं के अधिक प्रयोग से धरती और पानी में ज़हर की मात्रा बढ़ चली। यह ज़हर अनाज, साग, पात, फल आदि में भी चला जाता है। इस तरह हमारा पूरा भोजन विषाक्त बन रहा है। कीटनाशक ज़हर से मेंढकों के नन्हे बच्चे भी मर जाते हैं। जिससे मेंढकों की संख्या में और भी गिरावट आई है।

परिणाम यह है कि कुछ वर्षों में निर्यात के लिए मेंढक तो बचेंगे नहीं, लेकिन प्रकृति का पूरा चक्र गड़बड़ा जाएगा। प्रकृति बहुत दयालु और उदार है। यदि स्थानीय निवासी मेंढक खाकर अपनी आवश्यकता पूरी करते हैं, तो प्रकृति कुछ नहीं कहती। प्रकृति की अपनी व्यवस्था है। हम इस

व्यवस्था को पूरी तरह नहीं समझते। तात्कालिक लाभ के लिए इसे नष्ट कर बैठते हैं।

कई लोग पर्यावरण की रक्षा करना चाहते हैं, पर उन्हें दिशा नहीं मिलती। उन्हें कोई यह बताने के लिए सामने नहीं आता कि पर्यावरण की रक्षा के लिए उन्हें क्या करना होगा। ऐसे लोगों को यही कहा जा सकता है कि वे पर्यावरण की रक्षा का काम घर से ही शुरू करें। ऐसे बहुत से छोटे-छोटे कार्य हैं।

जब आपको बिजली की ज़रूरत न हो तो बिजली के स्विच बंद करना, पानी बचाना, वन्य जीवों की खाल से बने उत्पाद न खरीदना, रिसाइकल्ड कागज़ इस्तेमाल करना वगैरह ऐसे ही कुछ उपाय हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***